डॉ. नीतू परिहार
सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
हिन्दी-विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
मो. न. : 9413864055
Email : neetuparihar11@gmail.com

लेखक परिचय

डॉ. नीतू परिहार

26 नवम्बर, 1974

पीएच. डी., एम. ए (हिंदी, संस्कृत)

सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

समकालीन हिंदी कविता का काव्यशास्त्र-2002, हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच-2015, बागड़ का लोक साहित्य, (ई-पुस्तक)-2021, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में साहित्य, संस्कृति और समाज विषयक शोध आलेख, समीक्षाएँ, समकालीन कविता पर शोध। वर्तमान में आप शिक्षा मंत्रालय के राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान प्रोजेक्ट 'बागड़ का लोक साहित्य' के सह अन्वेषक हैं।

गत 18 वर्षों से अध्यापन, शोध एवं शोध निर्देशन।

अंशार प्रकाशन

9788186064887

₹ : 200.00

हिन्दी के समकालीन कवि: सर्जना के आयाम सं. डॉ. नीतू परिहार

हिन्दी के समकालीन कवि सर्जना के आयाम

संपादक
डॉ. नीतू परिहार

हिंदी के समकालीन कवि : सर्जना के आयाम
ISBN : 978-81-86064-88-7
© : लेखक
मूल्य : पाँच सौ रुपये
संस्करण : 2022
प्रकाशक : अंकुर प्रकाशन
1/1 कांजी का हाटा, गायत्री मार्ग
उदयपुर (राज.) 313001
फोन नं. : (0294) 2417094, 2417039
(मो.) 9413528299
ईमेल : ankurprakashan15@gmail.com
आवरण : एन.वी.आर्ट, उदयपुर
टाईपसेटिंग : देवेन्द्र कम्प्यूटर, दिल्ली
मुद्रक : आर्यन डिजिटल प्रेस,दिल्ली

Hindi Ke Samkaleen Kavi : Sarjana Ke Ayam (Hindi Literature)
Edited By : Dr Neetu Parihar ₹ 500

आमुख

मुझे चूल्हे की आग-सी धधकती कविताएँ चाहिए
खेतों में बालियों-सी ललहाती कविताएँ चाहिए
मुझे मोहब्बत के नशे में डूबी कविताएँ चाहिए
भोली गिलहरी-सी फुदकती कविताएँ चाहिए

—प्रतिभा कटियार

कविताएँ सदा ही मेरे आकर्षण का केन्द्र रही हैं। जब भी कोई पुस्तक, पत्रिका हाथ में आती है तो पहली नजर कविता को ही खोजती है। कविताओं को मैं चलते-फिरते भी पढ़ लेती हूँ, जिन कविताओं का मर्म पढ़ने के साथ ही समझ आ जाता है वह मुझे ज्यादा अच्छी लगती हैं। कविता हिंदी साहित्य में कई पड़ाव पार कर आज भी शिखर पर स्थित है।

पहले-पहल कविताएँ लयात्मक और तुक में लिखी जाती रहीं, यह लयात्मकता ही उन्हें सर्वग्राही बनाती रही। धीरे-धीरे परम्परागत बन्धनों को छोड़कर कविताएँ मुक्त छन्द में हमारे सामने आयीं। आज आधुनिक समय में भी कविताएँ अपने नए रूप और कलेवर के साथ साहित्य में उपस्थित हैं। आज की कविताएँ अपने समय की साक्षी हैं। उनमें कोई विषय ऐसा नहीं जिस पर बात न की गयी हो। आधुनिक कविताओं में सिर्फ प्रेम ही एक विषय नहीं है बल्कि आतंकवाद, पर्यावरण, प्रदूषण, घटते जंगल, सागर, नदियाँ, पहाड़, बालश्रम, स्त्री-शोषण, राजनीति, दरकते-रिश्ते आदि अनेकों विषय हैं जो कविताओं में अपना स्थान बना रहे हैं।

आज की कविता अपने आसपास घटित हो रही घटनाओं को अपने में

अनुक्रम

1	विश्वास के दीये-सी टिमटिमाती : वर्तिका नन्दा— *डॉ. नीतू परिहार*	13
2	अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी जीवन— *डॉ० नवीन नन्दवाना*	22
3	आखर अनन्त और जीवन में आस्था के कवि : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी—*डॉ० प्रीति भट्ट*	33
4	धूमिल : स्वातन्त्र्योत्तर कविता के उज्ज्वल 'मोची राम'— *डॉ० महेश चन्द्र तिवारी*	42
5	पवन करण की कविताओं में प्रतिबिम्बित नारी— *डॉ० नीता त्रिवेदी*	50
6	ममता कालिया की कविताओं में स्त्री-संघर्ष की गूँज— *डॉ० उषा शर्मा*	64
7	मंगलेश डबराल की कविताओं का सामाजिक स्वर— *डॉ० ममता पानेरी*	71
8	विजयदेव नारायण साही : सरल धरती का अभिलाषी कवि—*डॉ० कैलाश गहलोत*	77
9	अनामिका के काव्य में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति— *एकता देवी*	86
10	समकालीन बोध और धूमिल की कविता— *विद्याप्रभाकर डॉ० कनुप्रिया प्रचंडिया*	94
11	अनामिका : काव्यगत पृष्ठभूमि—*डॉ० वसुन्धरा उपाध्याय*	102

12 मंगलेश डबराल की कविता में ग्लोबल समय का जीवन यथार्थ— *डॉ० प्रिया ए.* 108
13 वंचित समाज के पैरोकार : अदम गोंडवी— *दीपक कुमार* 117
14 माथा चूमना किसी की आत्मा चूमने जैसा है : गीत चतुर्वेदी—विष्णु कुमार शर्मा 125
15 रघुवीर सहाय-यथार्थ की सच्ची समझ और ईमानदार अभिव्यक्ति— *श्री हरिराम* 131
16 समकालीन कवि अरुण कमल की काव्य दृष्टि— *पुनमाराम* 136
17 समकालीन कविता के फलक में चमकती कात्यायनी—डॉ० निर्मला राव 142
18 दुष्यन्त के काव्य नाटक 'एक कंठ विषपायी' : सामाजिक यथार्थ—डॉ० रिपुदमन सिंह उज्ज्वल 147
19 आलोक धन्वा की कविताओं में सामाजिक चिन्तन—डॉ० रेखा खराड़ी 153
20 ज्ञानेन्द्रपति के रचनात्मक काव्य में ऊर्जस्वित स्वर— *भंवरलाल प्रजापत* 162
21 समकालीन यथार्थ की कटु अभिव्यक्ति अनुराधा सिंह की कविताएँ— *तरुण पालीवाल, शोधार्थी* 171
22 राजस्थान के समकालीन हिंदी कवि नन्द किशोर आचार्य की काव्य-दृष्टि— *नरेन्द्र कुमार ओझा* 181
23 समकालीन यथार्थ की संवेदना रंजना कृत : 'सिर्फ काग़ज पर नहीं'— *वीरमाराम पटेल* 188
24 कवि विजेंद्र : एक अजस्त्र अनुगूँज— *जीनत आबेदीन* 198
25 कविता के आलोक में अशोक वाजपेयी— *भरत कुमार* 205
26 समकालीन काव्य व केदारनाथ सिंह के काव्य में लोक जीवन— *शीशराम मीणा* 213
27 समकालीन काव्य-मूल्य और अरुण कमल की कविता— *बजरंग लाल मीणा* 220
28 हिंदी कविता का सिपाही 'लीलाधर जगूड़ी'— *गौरव शर्मा* 229
29 समकालीन कविता में उदयप्रकाश की काव्य दृष्टि— *दौलत राम शर्मा* 239
30 समकालीन कविता में सविता सिंह के नारीवादी स्वर— *पूजा व्यास* 250
31 समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर कवि : आलोक धन्वा— *राजवीर सिंह गुर्जर* 258
32 समकालीन कविता के आलोक में मनीषा कुलश्रेष्ठ— *कविता कुमारी* 265
33 समकालीन काव्य दृष्टि और राजेश जोशी— *मंजीत सिंह* 274
34 सुमित्रा कुमारी सिन्हा के काव्य में यथार्थ बोध : एक अध्ययन— *भँवर लाल भाम्बी* 287
35 कात्यायनी के साहित्य में स्त्री के अन्तर्मन की अनकही— *निरूपम शक्तावत* 293
36 स्त्री मन और शैलजा पाठक की कविताएँ— *पूनम परिहार* 300
37 कितने प्रश्न करूँ : ममता कालिया— *ज्योति वर्मा* 306

2
अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी जीवन

—डॉ० नवीन नन्दवाना

समकालीन कविता का कैनवास बड़ा ही व्यापक है। यह कविता विविध रंगों, भावों और संवेदनाओं की महक को अपने में संजोए है। कविता हिंदी जगत में जब से समकालीन कहलायी तब से इस कविता ने अपने को विविधमुखी किया है। धीरे-धीरे इस कविता में विमर्शों की गूँज-अनुगूँज सुनाई पड़ने लगी। स्त्री विमर्श के रूप में हिंदी की समकालीन कविता ने रचनाकारों और पाठकों के सम्मुख अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की। इसी प्रकार बाद में दलित और आदिवासी जीवन को लेकर भी चर्चाएँ प्रारम्भ हुई और ये दोनों भी प्रमुख विमर्शों के रूप में उभरकर सामने आए।

जनजाति समाज की संस्कृति और उनके सुख-दुःख आदि का बयान करने के लिए कई जनजाति और गैर जनजाति साहित्यकारों ने अपनी कलम चलाई है। हिंदी जगत में पिछले कुछ दशकों से अब जनजाति या आदिवासी विमर्श का स्वर सुनाई पड़ा है। इस विषय पर लिखने वाले रचनाकारों ने इस समाज से जुड़े विषयों को सशक्त रूप से व्यक्त किया है। यदि जनजाति रचनाकारों की बात की जाए तो भारत के प्रमुख आदिवासी साहित्यकारों में जयपाल सिंह मुंडा, रघुनाथ मुर्मु, लको बोदरा, प्यारा केरकेट्टा, एलिस एक्का, कानूराम देवगम, आयता उरांव, राम दयाल मुंडा, बलदेव मुंडा, रोज केरकेट्टा, पीटर पॉल एक्का, वाल्टर भेंगरा 'तरुण', हरिराम मीणा, महादेव टोप्पो, वाहरूसोनवणे, ग्रेस कुजूर, उज्ज्वला ज्योति तिग्गा, निर्मला पुतुल, काजल डेमटा, सुनील कुमार 'सुमन', जोराम यालाम नाबाम, वंदना टेटे, सुनील मिंज, ग्लैडसन डुंगडुंग, रूपलाल बेदिया, अनुज लुगुन, गंगासहाय मीणा, केदार प्रसाद मीणा, ज्योति लकड़ा, अरुण कुमार उरांव और डॉ० मन्ना

लाल रावत आदि प्रमुख हैं।

अनुज लुगुन समकालीन हिंदी कविता में एक युवा हस्ताक्षर के रूप में प्रसिद्ध है। इनका जन्म 10 जनवरी, 1986 को सिमडेगा जिला, झारखंड में हुआ। वर्तमान में दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे अनुज लुगुन हिंदी की आदिवासी कविता का एक चर्चित नाम है। जनजति से जुड़े विषयों को ध्यान में रखते हुए आपने 'उलगुलान की औरतें', 'अघोषित उलगुलान', 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' और 'पत्थलगड़ी' शीर्षक से काव्य रचना की। इनके रचनाकर्म पर इन्हें भारतभूषण अग्रवाल सम्मान प्रदान किया गया। वहीं आप साहित्य अकादमी के युवा पुरस्कार-2019 से भी सम्मानित हैं। अपनी कविता 'अघोषित उलगुलान' में आदिवासी समाज की पीड़ा को उजागर करते हुए अनुज लुगुन लिखते हैं कि—

> **अलस्सुबह दांडू का काफिला/रुख करता है शहर की ओर**
> **और साँझ ढले वापस आता है/परिन्दों के झुंड-सा**
> **अजनबीयत लिए शुरू होता है दिन/और कटती है रात**
> **अधूरे सनसनीखेज किस्सों के साथ**
> **कंक्रीट से दबी पगडंडी की तरह**
> **दबी रह जाती है/जीवन की पदचाप/बिल्कुल मौन!**
> **वे जो शिकार खेला करते थे निश्चिन्त**
> **जहर-बुझे तीर से .../खेलते हैं शहर के**
> **कंक्रीटीय जंगल में/जीवन बचाने का खेल**
> **शिकारी शिकार बने फिर रहे हैं शहर में**
> **अघोषित उलगुलान में/लड़ रहे हैं जंगल**
> **लड़ रहे हैं ये**
> **नक्शे में घटते अपने घनत्व के खिलाफ**
> **जनगणना में घटती संख्या के खिलाफ'**

पंकज कुमार बोस ने अनुज लुगुन की कविता के विषय में लिखा है कि— ''अनुज लुगुन ने जब हिंदी की युवा कविता में प्रवेश किया तो वह एक शोर-होड़, करियरिस्ट भावना की आपाधापी, सस्ती यशलिप्सा से बौराई और पुरस्कारों की चकाचौंध से जगमगाती युवा कवियों की दुनिया थी, वाचालता जिनका स्थायी भाव थी, कविता में चमत्कार पैदा करना जिनका कौशल और कुछ चुनिन्दा कविताएँ लिख कर क्लासिक हो जाने का भ्रम पालना ही अन्तिम लक्ष्य था।